19/6/1966 रविवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– जाग सजनियाँ जाग, नवजुग आया.....

ओमशांति! मीठे–2 रूहों ने वा रूहानी बाप कहते हैं मीठे–2 बच्चों ने ये गीत सुना। इसको कहा ही जाता है– ज्ञान का गीत। जिस–2 गीत में कुछ न कुछ ज्ञान का ज़रा भी है, उसको ही उठा करके समझाया जाता है। ये गीत बच्चे रोज़ सुनते हैं। भले किसके घर में ग्रामोफोन नहीं है; पर ये गीत बहुत अच्छा है; क्योंकि इस गीत में ही है कि बच्चे, अभी जागो। अभी तुम जाग गए। आत्माएँ जाग गईं। सभी समझा जो बीता...। कहाँ से? मूलवतन से; क्योंकि मूलवतन से अपन यहाँ आए। कहाँ? भक्तिमार्ग में; क्योंकि भक्तिमार्ग का तो ... तुमने देखा है अच्छी तरह से और ... किया है। तो जो बीता, अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है। क्या बीता? तुम(ने) अपनी हिस्ट्री और जॉग्राफी, 84 जन्म की बीती हुई जानी। अभी तुम बच्चों को ये मालूम हुआ कि बाप ने आ करके हमको 84 जन्म की कहानी सुनाई और फिर ये समझाया कि अभी नई दुनिया, नई बातें। तुम नई बातें सुनते हो। किस द्वारा? बाप द्वारा समझाया जाता है। बाप तसल्ला(तसल्ली) देते हैं, धीर्य देते हैं कि बच्चे, अभी नई दुनिया में चलने के लिए सब नई बातें। कोई भी पुरानी बातें नहीं। पुरानी बातें जो भक्तिमार्ग की हैं, वेद–शास्त्र, ये सभी अभी खतम हुआ। तुम बच्चों ने सुना कि सतयुग से लेकर द्वापर तक कोई भी भक्तिमार्ग का रिंचक चेंज नहीं। ..बिल्कुल नहीं; क्योंकि वहाँ तो भक्ति का फल मिला हुआ है। जानते हो कि बाप आ करके भक्तों को फल देते हैं। तो अभी तुम बच्चों ने जाना कि फल क्या मिलता है, भगवान आ करके इन भक्तों को क्या फल देते हैं वा तुम अपने से बोलो कि हम जीवआत्माओं को अभी बाप कैसे इस भक्ति के बाद फल देते हैं। भक्ति जिसने जास्ती की है, ज़रूर उनको फल जास्ती मिलेगा। जिसने जास्ती भक्ति की है वो ज्ञान का पुरुषार्थ भी जास्ती करेगा। .....हम आत्माओं ने जितनी जास्ती भक्ति की है, द्वापर से ले करके कलहयुग तक और शुरू से भक्ति जास्ती की है, वो ज़ोर से फिर ज्ञान में जाएगा; क्योंकि ज्ञान में ज़ोर से जाएँगे तब देखो ये पद....। अभी ज्ञान और योग, दोनों के लिए हैं ये सभी पुरुषार्थ तुम्हारा। अच्छा, देहअभिमानी भी हो रहना है, देहीअभिमानी भी हो रहना है; क्योंकि बाप समझाते हैं कि कर्म करते और फिर बाप को याद करना है। तो देहअभिमान बिगर कर्म तो तुम कर नहीं सको। अभी ये तो ठीक है कि हमको बाबा को याद करना है; परन्तु बाप कहते हैं कि देहअभिमान बिगर अगर हम सिर्फ अपन को आत्मा समझें और बाप को याद करें, देह को भुलाने जाएं तो हमारे से कुछ काम नहीं होगा। बस, बड़ा मज़ा आएगा, हम बैठे रहें, बाबा की याद में बैठे रहें; परन्तु कर्म करना है ना। बाबा की याद में तो बड़ा मज़ा आता है। बाबा को बहुत याद करें। बस, उठते,बैठते,घूमें बाबा.....इस मेहनत करने के लिए भी पेट तो चाहिए ना। तो बाबा कहते हैं देहअभिमान भी रहना है, देहीअभिमानी भी होना है। देहीअभिमानी कोई नहीं है इस सृष्टि में सिवाय तुम बच्चों के।देहीअभिमानी क्यों नहीं हैं? कोई भी अपन को आत्मा भी भले समझे तो फिर परमात्मा का परिचय नहीं है; क्योंकि देहीअभिमानी। भले बाबा कहते हैं कि समझते हैं कि बरोबर हम आत्मा हैं और ये शरीर विनाशी है, ये आत्मा अविनाशी है, फिर क्या! फिर उनसे ये समझने से तो कोई विकर्म विनाश नहीं होगा। ये तो बहुत ही मनुष्य समझते हैं और एक/दो को कहते भी हैं– भई, ये पुण्यआत्मा है, ये पापआत्मा है, ये पवित्र आत्मा है। आत्मा के लिए तो सब कहते हैं। ये तो जानते हैं, तुम बच्चे भी ऐसे ही समझने से सिर्फ कि बरोबर ये दो चीज़ है– मैं और मेरा। मैं आत्मा और मेरा शरीर। ये तो कॉमन बात है। ये कोई नई बात नहीं है; परन्तु मूल बात बाप क्या आ करके समझाते हैं कि बच्चे, अब मुझे तुमको याद करना है आत्मा को। शरीर निर्वाह के लिए देहअभिमान में तो आना है ज़रूर। . .....देह को न खिलाएँगे तो देह तो सूख जाएगी। तो देहअभिमान में आना है ज़रूर ; परन्तु बाबा कहते हैं कि देह के लिए खाना–पीना भी पकाना है ज़रूर। देह बिगर तो तुम कुछ कर ही नहीं सकते हो ना। पर बाबा कहते हैं कि देहअभिमान होते हुए भी तुम देहीअभिमानी बनो। देह तो है ना.. देखते हैं। अभी हमको ये मालूम हुआ कि हम आत्मा हैं, ये देह है और ये देह जो शरीर है वो हम जन्म ब जन्म दूसरा लेते आते हैं और फिर ये अपना शरीर निर्वाह करते आते हैं। अभी बाप कहते हैं– देह बिगर तो कोई काम नहीं चल सकता है ना। तो बाप कहते हैं– देहअभिमानी भी रहना है, देहीअभिमानी भी रहना है। अभी

देहअभिमान हो करके कर्म करते, फिर आत्मा से अपने माशूक को भी याद करना है। तो तुमको माशूक का तो पता नहीं। किसको भी माशूक का पता नहीं कि माशूक यानी बाबा से हमको वर्सा मिलना है और बाबा को याद करने से विकर्म विनाश होगा। ये किसको भी नहीं याद है बिल्कुल ही। कोई भी नहीं ऐसे समझाते हैं। गीता में समझाते हैं कि भगवान बोलकर गया है; क्योंकि जो पास्ट हो गई है उसकी ये पुस्तक हैं, जो तुमको बैठकर सुनाते रहते हैं ना– कृष्ण ने ये किया, महाभारत में ये हुआ, लड़ाई हुई, कृष्ण ने खुद बैठकर गीता सुनाई, राजयोग सिखलाया; पर कब? वो भी तो उनको मालूम नहीं है ना। वो तो अगर कहें कि ये राजयोग सिखलाया। तो पीछे देखो कितने लाखों वर्ष की बात हो जाती है। तो ये नई बात सुनते हैं ना। तुम्हारी बुद्धि में अभी नया–2 रास्ता भी मिला कि अभी कैसे हम घर जाएँगे। फिर रास्ता मिला कि कैसे हम अपनी राजधानी में आएँगे। राजधानी कैसे प्राप्त करते हैं? सो तुम बच्चों को बाप बैठकर समझाते हैं कि बच्चे, और कोई भी तकलीफ नहीं करो। देखो, कितने भक्तिमार्ग की पंचायत है ! कैसे कर्मकाण्ड की पंचायत है! अभी यहाँ देखो, कोई मरते हैं घर में, कितना हंगामा रहता है। ब्राह्मण खिलाओ, 12 दिन बत्ती जगाओ, फलाना करो, ये करो, अरथी को ले जाओ। यहाँ तो बहुत दंगा है। यहाँ कुछ भी नहीं है। आत्मा कहती है– ये तो पुरानी चमड़ी है ना। अभी तुमको मालूम पड़ा ना। इस चमड़ी की मट्टी को हम क्या करेंगे! ये तो कुछ काम की...। कहाँ जाकर फेंकें! गंगा में मट्टी जाएगी। मट्टी जाएगी गंगा में, आत्मा को क्या होगा! अभी समझ की बात हुई ना। ये शरीर, जो है ही मिट्टी का, पाँच तत्व से बना हुआ, वो तो उसने छोड़ दिया। अब इस मिट्टी को जा करके कहाँ भी...। तो भी देखो, मिट्टी को जा करके तीर्थों पर ले जाना, ये करना, वो करना, कितना फालतू वेस्ट खर्चा....कितना वो होता है। फिर देखो कोई मरते हैं, कितना ब्राह्मण खिलाओ, फलाना करो, ये करो। देखो, कितना विस्तार होता है और यहाँ वो सब बंद हो जाता है। ज़रा भी नहीं। शरीर का, इस पुरानी जूती का क्या मान रखेंगे। हाँ, आत्मा कहती है ना– हम ये जो पुरानी जूती हैं, ये पुरानी जूती का क्या मान रहता है कुछ? वो तो हम बिल्कुल तंग हो गए। बाबा ने कहा, ये पुरानी जूती तुम क्या करेंगे! देखो, ... भी कहते हैं हम पुरानी जूती, शरीर को क्या करेंगे? देखो, वो फेंक देते हैं। तुमने देखे नहीं हैं, नहीं तो यहाँ भी बहुत निकलती हैं, मिलती हैं बहुत। तो ये बच्चों को बाप बैठकर समझाते हैं कि ये शरीर तो कोई काम ही नहीं है ना। ये तो यहाँ जला.....कचरा तो रखना नहीं होता है ना शमशान में। शमशान से कचरा उठाकर, नदी होती है, वहीं फेंक देते हैं। अभी यहाँ से कचरा, कोई मरता है, उठा करके झट डाल देते हैं। ऐसे नहीं है कि कोई घाट खास है जिसमें डालते हैं। वाह! घाट खास है, उसमें अगर हम लोग जाकर डालें तो उनका स्नान खराब हो जावे। यहाँ घाट है स्नान करने का लेक में। जो तीर्थ यात्री आते हैं ना। वो एक मंदिर के आगे घाट है। वहाँ जाकर स्नान करते हैं और यहीं डाल देते हैं बाजू में; क्योंकि समझ आ गई कि हम ..... क्या करेंगे इस पुराने शरीर को। इसलिए बाप कहते हैं ये देह का अभिमान तोड़। तुम जानते हो कि अभी आत्मा का ये 84 जन्म ; क्योंकि तुमको बैठ करके समझाते हैं। जो भी तुम 84 जन्म वाले हो यहाँ, वो सभी यहाँ आते हैं। जिनको ये समझाया जाता है। अभी 84 जन्म पूरा हुआ ना। अगर कोई कहे कि हमारा 84 न हो, तो ये संशय क्यों उठाना चाहिए? ये तो अच्छा ही है ना। शुभ बोलना चाहिए ना। तो वो बोले– क्या सबका 84? तुमको बुद्धि है, सारी दुनिया का 84 जन्म हो कैसे सकता है? 84 जन्म तो उनको ही मिलेंगे जो पहले–2 सूर्यवंशी में आया हुआ है, पहले–2 जो नई दुनिया में आया है। तो बच्चे, हम तसल्ली तो करते हैं ना। जो भी बच्चे होते हैं, अभी बच्चों की बात हो गई ना बाप की। तो जब बाप नया बनाते हैं तो बच्चे तो कहेंगे, नए में फट जल्दी–3 जा करके, उनमें जाकर बैठने की दिल होती है। तो उसको नया ही कहा जाता है, नए मकान में बैठे। तो अभी बाप (ने) समझाया है कि तुमको नया रास्ता मिलता है। देखो, गीत में है ना, नया रास्ता बिल्कुल, कोई भी ये रास्ता जानते ही नहीं हैं। जहाँ भी जाओ तहाँ मत्था फूटे। भले यज्ञ करो मत्था फूटे, तप करो मत्था फूटे..... यानी सीढ़ी उतरते रहना होता है ना। कोई फायदा तो होता ही नहीं है। तो बाबा कहते हैं– कुछ भी करो, कितना भी करो भक्तिमार्ग में, कभी भी कोई सद्गति नहीं पा सकते हैं अर्थात् न हैं शांति

धाम में यानी इस दुनिया से उस दुनिया में जा नहीं सकते हैं; क्योंकि वो भी तो दुनिया है ना। घर नहीं जा सकते हैं। सुखधाम नहीं जा सकते हैं। घर और सुखधाम, उसको कहा जाता है मुक्ति और जीवनमुक्ति। कोई भी मनुष्य सिवाय बाप के कभी भी नहीं जा सकते हैं। अच्छा, अभी ये भी तो समझना चाहिए बुद्धि से कि ये बुद्धि तुम मनुष्यों को है ना। वो जो शास्त्रों में लिख दिया है ना– सतयुग है लाखों वर्ष, तो मनुष्य की बुद्धि चलती नहीं है। ...विचार भी नहीं करते हैं। अभी तुमको विचार करना है, भले कल की बात है, आज क्या, कल की बात है, तुम समझा कि बरोबर हम यहाँ भारत में....। हम तो आदि सनातन देवी–देवता धर्म वाले थे ना और बस, हमारे जैसा सुख तो कोई को भी नहीं। बाप कहते हैं ना– ये जो देवी–देवता धर्म है, ये बहुत सुख का देने वाला है। अभी बुद्धि तो तुम बच्चों की चलती है ना– बरोबर भारत जैसा सुख कोई भी धर्म वाला देख नहीं सके। देखो, तुम अभी जानते हो ना कि स्वर्ग क्या है! नई दुनिया में क्या है! हीरे–जवाहरों के महल हैं। क्या जभी ये इस्लामी आते हैं, वो नई दुनिया देखेंगे? जो भी ब्रह्म निवास करते हैं, स्वर्ग में निवास कर सकते हैं? कोई भी नहीं। जब इस्लामी, तो फिर बौद्धी भी नहीं कर सकते हैं, क्रिश्चियन भी नहीं कर सकते हैं। तो है ना, बाप समझाते हैं– मीठे लाड़ले बच्चों, तुम जो फिर देवी–देवता बनते हो, तुम्हारे जैसा सुख और कोई भी नहीं ले सकता है। ये भले कोई सुख कितना भी बनावे कितना भी कोई महल बनावे, कितना भी सुख के लिए प्रयत्न करे, कितना भी धन खर्च करे, फिर भी सुख, जो स्वर्ग में है, वो कभी किसको मिल नहीं सकता है। यहाँ कितना भी सुखी रहते हैं, परन्तु सुखी रह न सके। कोई न तो कोई वक्त में बीमार हो जाएगा। अगर हेल्थ होगी तो वेल्थ नहीं होगी, फलाना नहीं होगा; क्योंकि ये दुःख का ही है। तो बच्चे तुम जानते हो अच्छी तरह से। बाप देखो, ये गीत में कितना अच्छा है– अब हे आत्मा, अभी जागो। तुम बच्चों को अभी तीसरा नेत्र ज्ञान का, उसको ही जागृता कहा जाता है। तुम बच्चों में कितनी जागृति आई है। तुम आत्माएँ, जीवआत्माएँ ही कहेंगे, फिर भी तो मनुष्य हो ना। वो भी मनुष्य हैं। अभी उन मनुष्यों में और तुम मनुष्यों में कितना फर्क हो गया! तुम सारे इस दुनिया की हिस्ट्री–जॉग्राफी सब कुछ जानते हो। तुम बच्चे जानीजाननहार हो गए। जानी–जानन(हार) का अर्थ बाप ने समझाया कि ऐसे नहीं है कि मैं दिलों को बैठकर के जानता हूँ। देखो, न वहाँ दिलों को जानता हूँ, न यहाँ मुझे दिलों की, एक–2 बच्चे के दिल को नहीं...। यहाँ तो हम जानते हैं कि कौन बच्चे अच्छी तरह से पढ़ते हैं। सो भी अभी अगर मैं न भी जानूँ; क्योंकि मुझे क्या दरकार पड़ी है। मैं तो बच्चों को सिखलाता हूँ, आत्मा को सिखलाता हूँ। अब आत्मा को अपना पुरुषार्थ करना है। ऐसे आत्मा को नहीं समझना चाहिए कि बाबा कहते हैं मैं आत्मा कहाँ तक ये बाप को याद करती है, कहाँ तक पवित्र रहती है, मुझे बैठकर थोड़े ही कुछ ख्याल करना होता है। मैं क्यों ख्याल करूँ? वाह! इतने हज़ारों का बैठ करके मैं यही ख्याल करूँ। नहीं, मैं रास्ता बताता हूँ। जो–2 रास्ते पर पुरुषार्थ करेंगे वो अपना पद पाएँगे। चाहे ये देखें उनको या वो न देखे। देखने की तो चीज़ है ना। ये तो हुआ आत्मा को बाप को याद करना और आत्मा को इस सृष्टि चक्कर को दिल में रखना। उसमें भी बाबा कहते हैं मैं बहुत सहज समझाता हूँ। सिर्फ इतना ही याद करो, अपन को आत्मा ज़रूर समझो अभी। ये जो देहअभिमान था, उसने तुम्हारी ; ये खेल में ड्रामा के अनुसार देहअभिमान के कारण तुम्हारी ये दुर्गति हुई है। ये भी तो समझते हो ना कि देहअभिमान से दुर्गति; देहीअभिमान से सद्गति; क्योंकि देहीअभिमानी बन हम बाबा को याद करते हैं और बाबा को हम याद करें, दिल तो होती है कि रात–दिन याद करें; परन्तु क्या करें, शरीर निर्वाह कैसे चलाएँगे? ऐसे तो नहीं है कि शरीर निर्वाह छोड़, घर–घाट छोड़, हम जंगल में चले जावें। सब कुछ छोड़ जावें, ये भी तो बाबा नहीं कहते हैं। बोलता है– नहीं, तुमको रहना भी घर में है, गृहस्थ में भी रहना है। सिर्फ एक होती है पवित्रता की बात, सो तो सभी जानते हैं। चित्र को भी दिखलाते हैं कि कमलफूल के समान रहना है। देखो, इसका तो अर्थ बच्चों ने समझा हुआ है ना, स्वदर्शन चक्रधारी को। देखो, शंख भी है, स्वदर्शनचक्र। कोई देवताओं को तो शंख नहीं है ना। तुम ब्राह्मणों को शंख है...बजाने का। क्या बजाने का? तो देखो, शंख का भी तो नाम तो है ना। वो जो खालिस लोग हैं ना, वो शंख बजाते हैं। वो बहुत हैं। जब कुम्भ का मेला लगता है,

..... ये शंख बजाने के भी औजार बहुत हैं। ..... देखो, तुम भी शंख बजाते हो। जब ये ज्ञान देते हैं ना, तो .... बड़ा–2 लगाय देते हो। क्या कहते होंगे तुम लोग ? (बच्चों ने कहा– लाउडस्पीकर) हाँ, लाउडस्पीकर। यहाँ तो तुमको कोई लाउडस्पीकर वगैरह कुछ लगाने का...। कभी मनुष्यों को जब टीचर बैठकर पढ़ाते हैं तो लाउडस्पीकर लगाएँगे क्या? नहीं। ऐसे लाउडस्पीकर से कोई भी कोई बात...। अगर लाउडस्पीकर भी हो, सो पीछे पिछाड़ी में, जबकि तुम उनको बताओ– सब सुनो, शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारा विकर्म सब विनाश होगा। मैं सर्वशक्तिवान हूँ, कोई कृष्ण सर्वशक्तिवान (नहीं) है ना। देखो, कोई वक्त आएगा। तुम जाते हो ना, बहुत–2 होते हैं, तो हो सकता है तुमको ये भी काम में ले आना पड़े, वो जो लगाते हैं वहाँ सुनने के लिए (किसी ने कहा– लाउडस्पीकर) जो–2 भी कुछ करते हो, बहुत दूर–2 में सुनने में आवे। हाँ, आगे चल करके वो काम में आएगा। फिर उसमें बहुत तो नहीं सुनाना है ना। बस, यही सुनाना है कि अभी मौत सामने आया हुआ है। अभी वो शांतिधाम में सबको वापस जाना है; क्योंकि ये महाभारत की लड़ाई है और इसमें विनाश ज़रूर है। देखो, हुआ है ना बरोबर विनाश। तुम बुद्धि से काम लो, गीता में जब महाभारत की लड़ाई लगी है, विनाश हुआ है। अरे, कोई नहीं रहा है। ... बाकी चार पाण्डव, वो भी जाकर गल मरे हैं। कुछ हुआ! तो ये तो समझ की बात है ना कि बरोबर जब महाभारत की लड़ाई लगी थी। और तो कोई की लड़ाई के लिए ये नहीं कहा जाता है ना कि भई चार गए, बाकी कुछ नहीं रहा। ये है तो सही ना, लड़ाई ऐसी जिसमें विनाश हो। तो बाप बैठ करके... नहीं, अगर टोटल विनाश हो, तो फिर ये इसमें.....। ये खण्ड भी खाली हो जावे। खाली खण्ड तो ये होता ही नहीं है कभी भी। इस खण्ड को अविनाशी कहते हैं। जैसे बाप को अविनाशी कहते हैं, आत्मा को अविनाशी कहते हैं, तैसे इस भारत खण्ड को भी अविनाशी कहते हैं। ...तुम जानते हो कि बरोबर जब ये हमारा स्वराज्य था, ऐसे कहेंगे– पहले–2 जब हम भारतवासी सूर्यवंशी थे, अरे पर चंद्रवंशी ही नहीं थे। तो इस्लामी, बौद्धी और क्रिश्चियन जो पीछे आते हैं, त्रेता के पीछे आते हैं ना। त्रेता में हैं चंद्रवंशी। तो देखो, पीछे कोई है कुछ। कोई भी धर्म नहीं है। तो बाप समझाते रहते हैं ना– अभी प्रलय तो होती नहीं है और बच्चों को समझाया है कि शास्त्रों में महाप्रलय और प्रलय। तो बाप कहते हैं– बच्चे, महाप्रलय कभी होता ही नहीं है। ये खण्ड कभी भी विनाश नहीं होता है। इसको अविनाशी खण्ड क्यों (कहा) जाता है? बाबा अविनाशी है ना। उनकी बर्थ प्लेस है ना। बाबा ने समझाया– ये बर्थ प्लेस है ना। तो अभी हमको खुशी होती है ना– ओहो! बाबा की ये बर्थप्लेस और वो बाबा क्या करते हैं? तो बाबा सर्व का सद्गति दाता वा सर्व का दुःख हर्ता और सुख और शांति कर्ता। ये याद रख देना– सर्व का दुःख हर्ता और फिर सबका सुख और शांति कर्ता। अभी इस समय जो .... आएँगे ना, बोलेंगे– शांति चाहिए, शांति चाहिए, बस शांति। आत्मा को शांति क्यों याद आती है घड़ी–2 ? शांति को(की) ही याद क्यों आती है? क्योंकि शांति तो घर है ना। घर किसको याद नहीं आता है! विलायत में जाते हैं, क्या घर भूल जाते हैं? अरे बच्चे, विलायत में ऐसे–2 हैं, बोलते हैं कि हम मरेंगे तो हमारे शरीर की जो मिट्टी बनी है ना, वो मिट्टी भी वहाँ जाए। तो देखो, मिट्टी ले आते हैं। शरीर तो खतम कर ले आते हैं या तो शरीर को ही ले आते हैं डालकर एरोप्लेन में कि हम अपने इस खण्ड में...। तो अभी तुम बच्चे जानते हो ना, सबको अगर मालूम होता तो हमारा सर्व का सद्गति दाता, शांति वा सुख दाता, इस दुःख से हमको मुक्त करने वाले का ये है तो बच्ची ये बहुत बड़ा भारी तीर्थ और बड़ा भारी तीर्थ के लिए यहाँ बड़े–2 मंदिर। कोई भी मंदिर कोई हाथ भी नहीं लगा सके। एकदम मत्था टेके शिव के ऊपर। सब आकर फूल चढ़ावें एक शिव के ऊपर। अभी तो देखो कितना फूल चढ़ाते हैं! अभी गाँधी के ऊपर, वो फलाना के ऊपर। कौन बिचारा दूसरा था? शास्त्री के ऊपर। फिर फलाने के ऊपर। जो–2 बड़े होते हैं ना, आते हैं, उनकी समाधि पर जाते हैं। और तो उनके समाधि पर क्या चढ़ाना है? जो सर्व की सद्गति दाता, जो शांति, मुक्ति देते हैं, जीवनमुक्ति देते हैं, फूल तो उस एक के ऊपर चढ़ाना होता है ना। एक का तो नाम–निशान गुम कर दिया। देखो, सुख और शांति देने वाला, उनका नाम–निशान गुम .... अभी ड्रामा हुआ ना। तो बाप समझाते हैं– बरोबर मेरा नाम–निशान

गुम कर दिया ना। मैं हूँ ना अभी सर्व का। अभी तुम जानते हो, और तो दुनिया में कोई नहीं जानते हैं। तो जो–2 जानते जाते हैं वो बाप से वर्सा लेने के लिए पुरुषार्थ करते रहते हैं। तो बाप समझाते हैं ना बच्चों को– बच्चे, एक तो मैं हूँ तुम बच्चों को सुख देने वाला। मेरा नाम ही है दुःख हर्ता, सुख कर्ता अर्थात् दुःख से लिबरेट करके क्या करेंगे? वो तुम जानते हो दुःख से लिबरेट करके क्या करेंगे। तुम जानते हो कि.. शांतिधाम में शांत है, सुखधाम में सुख है। बस, शांतिधाम की भी जगह अलग हो गई, सुखधाम की भी जगह अलग हो गई। बाकी क्या रहा! ये है दुःखधाम। इसको दुःखधाम कहेंगे ना। इसका नाम ही है दुःखधाम। अगर कोई बहुत धनवान है तो उसको कहा जाता है, सन्यासी खुद कहते हैं, ये सुख अल्पकाल क्षणभंगुर कागविष्ठा समान है; क्योंकि उसमें बीमारियाँ–सीमारियाँ, झगड़ा वगैरह–2। देखो, राजाओं–2। तुम सुनते हो, एक बस्तर का राजा महाराजा, गोलियों का शिकार हो गया। समझा ना। अभी देखो, क्या रही राजाई! वो पैरों से, लाठियों से ठोकराते रहते हैं। क्या इज्जत है, बताओ। किसका है कोई इज्जत? कुछ भी नहीं। कोई की भी इज्जत नहीं रखते हैं। ज़रा गाँधी जैसा बापू जी भारत का एकदम, कोई आया, गोली लगाय दिया। देखो, अभी कोई की इज्जत साथ में नहीं है। कोई भी है, उनको ये डर है। तुम देखते हो, बड़े–2 एकदम, अरे बहुत करोड़पति–पद्मपति, ये जो होते हैं ना– प्राइम मिनिस्टर और बड़े–2 बनते हैं ना, इनके पास बहुत धन होता है। बस, आज बिचारा घूमने गया, कल आया, उनकी बादशाही से ...। तुम बादशाह नहीं हो। बस, जाकर दूसरा बन गया। देखो, दुनिया का ये हाल है ना। तो सबको दुःख हुआ ना। सबको दुःख ही दुःख है यहाँ।.....कोई भी इतना सुख देख नहीं सकते हैं। स्वर्ग का नाम ही देखो कितना अच्छा–मीठा है। बाबा कहते हैं कि बच्चे, तुमको तकलीफ तो नहीं देते हैं ना। बाप को याद करना है और वर्से को याद करना है। वो छोटे बच्चे होते हैं जिनमें ज्ञान नहीं और तुम्हारा जो ऑरगन्स हैं, आत्मा कोई छोटी–बड़ी नहीं होती है, जैसे–2 ऑरगन्स बड़े होते जाते हैं, कर्मेन्द्रियाँ बड़ी होती जाती हैं। तुम जानते हो कि जैसे–2 बड़ा होता है तैसे वो बच्चा, वो आत्मा अच्छी तरह से बोलने लग जाती है। आगे तो देहअभिमानी था– बच्चा बोलता है, अभी सीख रहा है, फलाना हो गया है। नहीं, अभी तुमको मालूम हुआ कि आत्मा ही कहती है कि मेरा शरीर अब छोटा है। आत्मा कहती है– हमारा शरीर अब जवान है। आत्मा कहती है मेरा शरीर अब वृद्ध है। तो अभी ये ज्ञान बाबा सिखलाते हैं। क्यों बाबा ने कहा कि सतयुग में ये आत्मा का ज्ञान है। वो जानते हैं कि हम आत्मा है, हमारा शरीर छोटा है। हमारा शरीर युवा बनेगा। हमारा शरीर जब वृद्ध बनेगा ना, हम फिर वो शरीर छोड़कर दूसरा ले लेंगे। तो उसको कहा जाता है– आत्मअभिमानी। पीछे परमात्मा अभिमानी यानी मैं परमात्मा को जानता हूँ। वो कोई को फिर मालूम नहीं। इसलिए तुम हो सर्व से ज़्यादा नॉलेजफुल। तुमको कहा भी जाता है– नॉलेजफुल। बाप की जो भी महिमा है यानी नॉलेजफुल नहीं बने हो, बाकी थोड़ा रोज़ है। .. नॉलेज क्यों नहीं है बच्चों को ? देखो, कितनी नॉलेज है! तुम कितने बड़े–2 को सुनाते हो। इसका नाम ही अलग है। इसको कहा ही जाता है रूहानी नॉलेज। इसका अक्षर का नाम ही है रूहानी नॉलेज जो रूह यानी रूहानी बाप आ करके आत्मा को नॉलेज देते हैं और एक बार। तो नई बात हुई ना। एक बार देते हैं और फिर देते भी हैं हर 5000 वर्ष। नहीं तो वो तो शास्त्रों में तो लिख दिया है बरोबर वो देते हैं, कोई राजयोग सिखलाते हैं; परन्तु उसको राजयोग सिखलाते तो लाखों वर्ष हो गए। तो घोर अंधियारा हुआ ना। तो अभी तुमको जब एक सोझरा मिला है, जागे हो, तो सजनियाँ कह देते हैं; क्योंकि सजनियाँ का साजन एक। इसलिए सब कहा जाता है ब्राइड्स और बाप कहते हैं मैं हूँ ब्राइडग्रुम; क्योंकि मैं तुम्हारा बाप भी हूँ, तो फिर साजन भी हूँ। वो कहा भी जाता है पतियों का पति भी है, बापों को बाप भी है, गुरुओं को गुरू भी है। ये क्यों कहते हैं? अरे सबका बाप भी, बापों को बाप भी वही है, टीचरों का टीचर भी वो है; क्योंकि वो सुप्रीम टीचर है। ये गुरुओं का गुरू भी वही है; क्योंकि एक गुरू है। सर्व गुरुओं की सद्गति दाता है। ज्ञान की बात हुई। तभी बाप कहते हैं– तुम कोई भी ये शास्त्रों की ज्ञान की बातें जो समझाते, ये सब है भक्ति। ये सब जो कुछ भी कहते हैं, ये सभी असत्य कहते हैं, ये सब झूठ। अभी तुम समझ गए ना। अभी देखो, बरस–2 अमरनाथ

का मेला, सबका लगता है, बद्रीनाथ का मेला, फलाने का मेला। अभी क्या है ये ? ये सत्य है? बाबा बोलते हैं– बिल्कुल झूठ है, कोई बात है ही नहीं। क्या ऊपर में रखा है ज्ञान अमृत पीने के लिए ? वहाँ कोई जाते हैं क्या? अच्छा, कथा कोई है थोड़े ही। अमरनाथ में कितना मेला लगता है! कितना खर्चा होता है! कितना गवर्मेण्ट को प्रबंध करना पड़ता है! कितनी तकलीफ होती है! अभी तो फिर भी सुख कर दिया; परन्तु आगे तो बहुत ही दुःख। टूट जावे, गिर जावे, अन्न न मिले, फलाने न मिले, बहुत तकलीफ होती है। उतनी बरसात पड़ जावे। देखो, वहाँ जब जाते हैं, क्या कच्छ में बाल–बच्चा ले जाएँगी? बताओ। वहाँ तीर्थों पर इतना ऊँचा, तुम बच्चे–2 कैसे ले जाएँगी! जब ऐसी यात्रा पर जाते हैं तो कोई न कोई को सम्भाल कर ले जाते हैं और बरोबर दो–2, तीन–2 महीना यात्रा करते हैं; क्योंकि तकलीफ है बच्चों को ले जाएँगे तो। तो बाबा कहते हैं यहाँ भी देखो तुमको बैठ करके सुनना है। अभी छोटे बच्चे तो नहीं सुनेंगे ना। तुमको सुनना है। जबकि तुम तीर्थों में जाते हो और बच्चों को कोई न कोई प्रबंध से छोड़कर आते हो और यहाँ तो तुम आते हो ज्ञान सुनने के लिए और योग सीखने के लिए। यहाँ तो जब बैठते हो, जब बाबा ज्ञान सुनाते हैं, चूँ–चाँ भी नहीं। ये कोई यहाँ से उठते हैं तो अटेन्शन चला जाता है बाबा का। यहाँ देखते हैं तो बुद्धि का योग जैसे कि टूट जाता है। तो यहाँ शांत से बैठकर क्लास में अच्छी तरह से। देखो, टीचर बैठते हैं, जब सुनाते हैं तो अटेन्शन। टीचर सुनाते हैं और बुद्धि अटेन्शन रहती है। बाबा कहते हैं– ज्ञान में ज्ञान सहज है वास्तव में फिर ; क्योंकि बाबा कहते हैं अच्छा, चलो ऐसे करते रहो, कुछ भी करते रहो, टूल्स से काम करते रहो, भले देखते भी रहो मैं ये औजार बनाता हूँ। अच्छा, हम बनाता हूँ। हमारा बुद्धि का योग बाप के पास; क्योंकि इस कमाई से, ये जो हम बैठकर कमाई करते हैं, हम यहाँ बाबा को याद करेंगे तो हमारी कमाई बड़ी जबरदस्त है। हम एवरहेल्दी बनेंगे, एकदम निरोगी। मेरी आयु बहुत बड़ी हो जाएगी। देखो, ये अपने से बात करने की बात हुई ना। बाबा सिखलाते हैं। अच्छा, हम बैठ करके खाना पकाते हैं। अच्छा, खाना (पकाने में) तो हाथ काम करेगा ना। हाथ काम करें, बुद्धि भी काम करती है; पर बुद्धि को बोलते हैं कि बच्चे, काम भी करो। सो तो कर्मेन्द्रियों से करेंगे ना। तो देहअभिमान चाहिए ना। बाकी जो तुम्हारी आत्माएँ कि बाप को याद भी करो। तो क्या होगा उस याद से ? तुम्हारा भी कल्याण। जो चीज़ बनाएँगे वो भी बड़ी शुद्ध बन जाएगी। बच्ची, प्रैक्टिस है। कुछ तो मेहनत होगी ना। ऐसे थोड़े ही है बस, वो बादशाही मिल जाती है किसको। अरे, विश्व की बादशाही! अरे, तुम ये बनते हो। देखो, तुम यहाँ आते ही हो ये बनने के लिए। कोई कम है? कमाई कम है? 21 जन्म तुम स्वर्ग और त्रेता के मालिक बनते हो; क्योंकि ये है तो राजयोग ना। राजाई प्राप्त करने के लिए तो तुम यहाँ आते हो ना। ...तुम्हारी बुद्धि में आया ना– बरोबर हमारा ये मंदिर। हम यहाँ राजयोग कर रही हैं। ये चित्र में भी ऐसे ही दिखलाया है। हम यहाँ अभी बाप को याद कर रहे हैं। किसलिए? स्वर्ग की स्थापनाएं करने। अभी तुमने समझा ना– आदिदेव–आदिदेवी ब्रह्मा–सरस्वती और फिर प्रजापिता होने के कारण बहुत बच्चियाँ। तो सरस्वती भी बच्ची हुई ना। अच्छा, उनकी भी तो माता ये फिर ठहरी ना। इसको कहा जाता है त्वमेव माताश्च पिता। तो देखो, बाबा भी कहते हो, मम्मा भी कहते हो। अच्छा, अभी तुम शिवबाबा को माता–पिता नहीं कह सकेंगे ना। तुम ब्रदर्स हो और वो बाप है। ऐसे ही गाते हैं 'ब्रदरहुड'। हम सब ब्रदर्स का वो बाप है। अभी मुख से सभी गाते भी हैं कि हम सभी ब्रदर्स हैं। ऑल ब्रदर्स। तो फिर ऑल ब्रदर्स का बाप होना चाहिए। ऑल ब्रदर्स का वन बाप। तो देखो, जब ऑल ये ब्रदर्स हैं और वन बाप है, तो फिर हमको सबको स्वर्ग का सुख तभी जानना चाहिए। एक बाप, हम सब बच्चे। ऐसे कहते हैं आ करके, जब भला बाबा है, भगवान है, हम सब उनके बच्चे हैं, तो भला हम सबको स्वर्ग में क्यों नहीं। अरे पर, अभी देखो तुम सृष्टि के ड्रामा को, ये बना–बनाया ड्रामा– सत, त्रेता, द्वापर, कलहयुग। अभी सभी इतने धर्म भी बने हुए हैं। अभी ऐसे कैसे हो सकता है कि सभी स्वर्ग में आ सकें। आ ही नहीं सकेंगे। इतनी सभी आत्माएँ तो कलहयुग में होती हैं ना– साढ़े पाँच सौ करोड़। ये तो कोई भी नहीं समझते हैं कि पैराडाइज़ में जब देवी–देवता धर्म में हैं, वो तो धर्म ही अलग है। उसमें तो थोड़े ही होंगे ज़रूर; क्योंकि ये ड्रामा में ये राज़ है, सो समझ

भी कहती है, तो बरोबर थोड़े होंगे सतयुग में। सब तो हो भी नहीं सकते हैं। ये ठीक है, बाप है सबका ; परन्तु होना नहीं चाहिए; क्योंकि ड्रामा पहले से ही बना हुआ है ये धर्मों का। सभी स्वर्ग में आएँ तो पीछे ये नर्क गाया नहीं जावे; क्योंकि स्वर्ग से तुम नर्कवासी बनते हो। तो ये सभी बातें अच्छी तरह से समझने की हैं और बाबा ने ये कहा है कि बच्चों, तुम कम कार डे। अभी कहते हैं ना। अभी कम–काम जब करेगा तो देहअभिमान ज़रूर चाहिए। ...शरीर बिगर तुम बाप को याद कैसे कर सकते हो! ज्ञान सुनते हो। आत्मा सुनती है। आत्मा सुनकर कहती है– हाँ, मैं अभी बरोबर पतित हूँ, तमोप्रधान हूँ और वो गाते हैं सभी– हे पतित–पावन आओ, पतित–पावन आओ। सतयुग में थोड़े ही कोई पावन(पतित) रहता है। तो देखो, सतयुग होवे तो खेल ही नहीं बने ना। सतयुग–त्रेता, त्रेता फिर चाहिए तो सही ना। अभी सब तो नहीं सतयुग में आएँगे। हो नहीं सकता है यानी ड्रामा में गाया जाता है ना, बना–बनाया है ना। भई, सत,त्रेता,द्वापर,कलहयुग। सूर्यवंशी,चंद्रवंशी,वैश्य... वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी तो ऐसे फिरती है ना। तुम बच्चे अभी सब अच्छी तरह से जागे हुए हो। अभी बाबा आया हुआ है, उनसे हमको वर्सा ज़रूर लेना है। भक्तिमार्ग में हमने बहुत याद किया है। हमने आधाकल्प पूरा याद किया है। हम(ने) सबकी पूजा की। शिव की पूजा की, देवताओं की पूजा की, फिर भित्तरों,ठिक्करों,पत्थरों को, ये सभी पूजाएँ कीं। कच्छ की, मच्छ की, धूर की, छाई की मतलब सबकी। ये गणेश–वणेश बनाया, उनकी भी, हनुमान की। देखो, हनुमान के कितने पुजारी होते हैं! बहुत होते हैं हनुमान की! क्यों? हनुमान तो बंदर है? इसका अर्थ ये नहीं, वो श्रीरामचंद्र को मदद किया था। जैसे अपन कहते हैं खुदाई खिदमतगार, तो वो राम के खिदमतगार बंदर बने थे। इसलिए ये बंदर को...। अब ये ...बंदर तो नहीं थे ना। ये तो सफेद झूठ है ना। इसको क्या कहें? कुछ ऐसे होते हैं, ये तो बिल्कुल ही सफेद झूठ बोलते हैं। अभी झूठ को तो काला कहना चाहिए ना। देखो ना, सफेद झूठ बोलते हैं एकदम। साफ सच एकदम। बाबा बोलते हैं, ये कुछ है नहीं। अभी तुम समझू बन गए। यहाँ बहुत होंगे जो हनुमान के भी पुजारी होंगे। हनुमान की पूजा भी बहुत है। ये क्यों? ये राम के खिदमतगार थे और तुम हो शिवबाबा के खुदाई खिदमतगार। अभी कहाँ राम के बंदर खिदमतगार, कहाँ शिवबाबा के तुम मनुष्य खिदमतगार! भक्ति क्या है और फिर ज्ञान से सुख कैसे मिलता है! अभी तुमने समझा भक्ति हमने की है, चक्कर पूरा किया है। तुम जानते हो अभी, तुमको समझाया जाता है कि हमने चक्कर लगाया। अभी देखो, तुम(ने) सुना ना कि हम–तुम सब कुछ जान चुके एकदम। इस सारे रचता और रचना के आदि,मध्य,अंत को जान गए। तो तुम कौन बने? तो बाप के हम बच्चे ही बने। परमपिता परमात्मा, जो ज्ञान का सागर है, तुम उनके बच्चे। तभी ये तो तुम जानते हो ज्ञान का सागर बाबा है। उसने हमको सारा इस सृष्टि के चक्कर का आदि,मध्य,अंत, मूलवतन किसको कहा जाता है और देखो अभी तुमको मालूम परमात्मा...है, ऊपर में होगा, हम लोग देखते तो हैं, बड़ा करके दिखलाते हैं और फिर नीचे छोटा सालिग्राम। बस, दूसरा तो कोई साइज़ होता ही नहीं है। ऐसे नहीं कि हम कोई इनका भी छोटा–बड़ा रखते हैं। अब ये तुम जानते हो बच्चे कि बाबा भी इतना ही है। तो इससे सिद्ध हुआ कि कोई भी आत्मा अपन को जानती है कि हम बिन्दु समान हैं, स्टार हैं। बाप को समझती नहीं है फिर। बाप के लिए ये बड़ा.....जब हम हैं छोटी, ये बाबा इतना बड़ा क्यों? इसको परमात्मा क्यों कहा जाता है? छोटा क्यों नहीं है? आता है किसके बुद्धि में? आता था अभी बुद्धि में? नहीं, अभी तुमको आता है। अभी पूजा किसकी करेंगे? अभी पहले–2 जो पूजा करने की बात है, हम किसकी करें? अच्छा, आज शायद जाना है किसको, बाबा थोड़ा जल्दी भी करते हैं। तो ये रेजगी(फुटकर) बाबा बैठ करके समझाते हैं कि कितनी बेसमझ, अपन को आत्मा समझना और फिर परमात्मा को बड़ा भी दिखलाना। पूजा करते हैं....फिर भी बोल देते हैं– परमात्मा सर्वव्यापी। तो तभी रूद्र ज्ञान यज्ञ रचते हैं, उनको बड़ा, उनको छोटा क्यों रखते हो? ... परमपिता परमात्मा बेहद का बाप बोलते हैं– हे मीठे–2 सिकीलधे। देखो, ऐसे कोई भी कहेगा नहीं, कोई को आएगा भी नहीं, जो ये बातें कुछ करें। मीठे–2 सिकीलधे, 5000 वर्ष के बाद, सिकीलधे का अर्थ भी तो चाहिए ना। 5000 वर्ष के बाद फिर से आए मिले हुए, कौन फिर? ब्रह्मा मुखवंशावली सर्वोत्तम ब्राह्मण कुलभूषण। देखो, तुम....फिर मूँझो नहीं इसमें,

ये चोटी। चोटी को ही कहा जाता है सर्वोत्तम ; क्योंकि चोटी को(के) ऊपर है बाप। बाप बैठ करके ब्राह्मणों को समझाते हैं। तो कहते हैं ब्राह्मण कुलभूषण, सर्वोत्तम ब्राह्मण, देवताओं से भी कुलभूषण; क्योंकि तुमको अभी बाबा मिला है बच्चे। वो ... सेवा में हाज़िर है एकदम। तुम्हारा बाबा भी है, तुम्हारा ये शिक्षक भी है और ये बाबा ऐसा मीठा है, जो बाबा बोलते हैं– हम तुमको ले जाएँगे। ऐसी गारंटी कभी कोई गुरू कर ही नहीं सकते हैं कि हम भी आत्मा जाएँगे और तुम्हारी भी आत्मा को साथ में ले जाएँगे। ऐसे कभी कह ही नहीं सकते हैं एकदम। ये तो कहते हैं ना– हम तुम बच्चों को, अगर श्रीमत पर चलेंगे, जाएँगे तो ज़रूर, ले तो ज़रूर जाऊँगा, इसमें कोई...; परन्तु कोई बिगर सज़ा और कोई सज़ाएँ बहुत खाएगा। कयामत के समय हिसाब–किताब चुक्तू कर ले ज़रूर जाऊँगा, ये गारंटी और सबको। सो तो बरोबर महाभारत की लड़ाई में बोला है– मच्छरों के माफिक। तो बरोबर हुआ ना, बाप जाएगा, उसके साथ तुम सब भी जाएँगे। सो भी साजन की कितनी बड़ी बरात। इसको कहा ही जाता है– शिव की बारात। पिछाड़ी शिवबाबा आगे जाएँगे। तो बोलते हैं, ऐसी बरातें होती हैं ना। तुम लोग देखे हो, मक्खी की मक्खी होती है ना। उसमें फिर रानी होती है। रानी की बरात होती है। रानी आगे भागेगी, अरे बात मत पूछो छर्रऽऽऽ इतनी लाखों अनगिनत फट एकदम जाएँगी। रानी जाकर कहाँ बैठीं, सब वहाँ .....इतने–2 एक, एक इतने में ही सारा मनारा बन जाएगा। (किसी ने कहा– यूनिटी है)। यूनिटी देखो कितनी! पर ये यूनिटी कैसी कि उनका भी ये है दृष्टान्त के मुआफिक। साजन बाप भी जाएँगे और सब आत्माओं को। तो ये सुनने का मज़ा है ना। अच्छा .. टोली ले आओ। ... उसमें ये अंधे के औलाद और सजे के औलाद क्या करत भये? चलो। .....में सब सुनते हो ना– भगवानुवाच ये धर्मक्षेत्रे। ये जो भारत है ना, बस इस जैसा धर्म का क्षेत्र कोई होता ही नहीं है। अरे, देवी–देवता यहाँ रहते थे। बाप यहाँ आते हैं सबकी सद्गति करने वाला। तो धर्मक्षेत्रे कर्मक्षेत्रे। कुरूक्षेत्रे माने कर्मक्षेत्रे। इस समय की बात, भगवानुवाच– ये धृतराष्ट्र, अंधे के औलाद और सजे के औलाद क्या करत भये? बाबा कमाल है, आपसे तो वर्सा ज़रूर लेंगे। तो देखो, कितनी याद रहती है! कुछ भी बाप को याद करने में तकलीफ आती हो। अभी देखो कोई ये प्रश्न उठ सकता है किसका कि कोई भी बच्चे को बाप को याद करने में तकलीफ हो तो बाबा से राय लेवे। अभी कोई आएगा? आना चाहिए कोई? और तो कोई बात नहीं। सीधी–2 बात है, बाबा कहते हैं। आत्माएँ जानती हैं हमारा बाबा है, वो कहते हैं– अभी मुझे याद करते रहो तो तुम्हारा बेड़ा एकदम पार। बस, सभी तुम्हारा विकर्म विनाश हो जाएगा और फिर स्वर्ग के मालिक बन जाते हो। अभी और क्या कहें! अभी कहें, उनसे पूछें– याद करते हो? अरे बच्चे, उनको तो याद करना ही है। बच्चे हैं सो तो याद करना पड़े। तो बाप को भी याद करना पड़े, मिल्कियत को भी याद करना पड़े। अरे, मिल्कियत देखो कितनी है! शिवबाबा एडॉप्ट करते हैं बच्चों को। तो बच्चे, शिवबाबा ने तुमको एडॉप्ट किया है। अभी मनुष्य तन में एडॉप्ट किया है। क्यों? तुमको पढ़ाय करके स्वर्ग का मालिक बनाना। शिवबाबा ही तो वर्सा देते हैं ना। तो वाह! उसका तो बच्चा बनना बिल्कुल ज़रूरी है। अभी बाबा का बच्चा बनकर, फिर बोलते हैं– ये करो ...गृहस्थ में रहो, कमल फूल के समान रहो। ये धंधा करो, उनकी सम्भाल करो। फिर डायरेक्शन देते हैं। कोई तकलीफ तो है नहीं। अच्छा! मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।